

विद्यार्थी विशेषांक

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०१९
वर्ष : २८ अंक : ९
(निरंतर अंक : ३१५)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



श्रीराम नवमी
१३ व १४ अप्रैल



श्री हनुमान जयंती
१९ अप्रैल



साँई श्री लीलाशाहजी महाराज
प्राकट्य दिवस : २८ मार्च

पूज्य बापूजी का सर्वहितकारी मंगलमय संकल्प व अथक प्रयास आज पूरे विश्व में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' आदि के द्वारा निर्दोष प्रेम की गंगा बहा रहा है। ऐसे इन परम पवित्र, मंगलमूर्ति महापुरुष के ऋण से उच्छ्रय होने हेतु हम कुछ तो कर पायें... उनके समाजहित के कार्यों में सहभागी ही हो जायें !



सिंगापुर



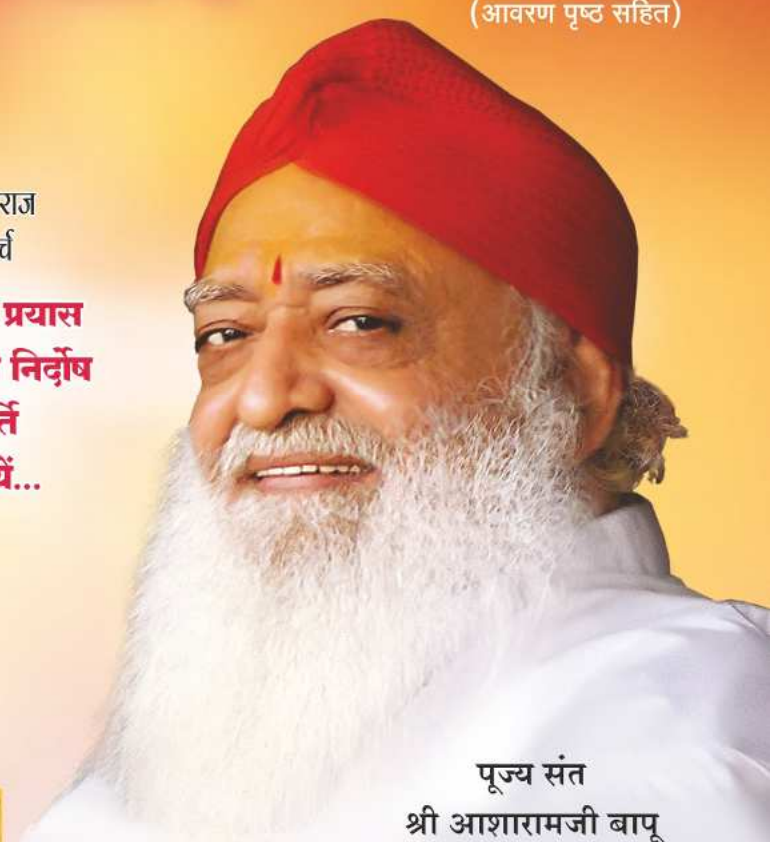
सैन चीस-कैलिफोर्निया



भावनगर (गुज.)



सादुंगा-मुंबई



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू



राजनांदगाँव (छ.ग.)



मालदा (पं. बंगाल)

अन्य तस्वीरें आवरण पृष्ठ ४ व ३ पर

अवश्य पढ़ें विद्यार्थियों के लिए
विशेष उपयोगी ज्ञान-भंडार !

ट्वीटर पर वर्ल्डवाइड ट्रेंड्स में
शीर्ष पर पहुँचा मातृ-पितृ पूजन दिवस



- ✳ याद न रहने के मूल कारण क्या ? १९
 - ✳ एकाग्रता का प्रभाव, पुनः हुआ ग्रंथ का प्रादुर्भाव १८
 - ✳ स्कूली परीक्षा के साथ जीवन की परीक्षा में सफलता हेतु... २३
 - ✳ पढ़ाई में आशातीत लाभ हेतु ९
 - ✳ एक कमजोर विद्यार्थी कैसे बना साइबर सिक्योरिटी रिसर्चर ? ३०
- तथा और भी बहुत कुछ...



पूज्य बापूजी ने बढ़ाया भारतीय संस्कृति का गौरव विश्वभर में छाया मातृ-पितृ पूजन दिवस

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से हो रहे समाजोत्थान-कार्यों की अमेरिका में भी प्रशंसा : “कैलिफोर्निया

राज्य विधानसभा की ओर से मैं विधानसभा सदस्य कानसेन चु इस मान्यता-पत्र के द्वारा



(संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से संचालित) ‘श्री योग वेदांत आश्रम’ को पिछले २१ वर्षों से सभी लोगों और बच्चों के उत्थान हेतु निष्ठापूर्ण प्रयासों के लिए मान्यता प्रदान करता हूँ, साथ ही हमारे समुदाय के युवा लोगों की ओर से मातृ-पितृ पूजन दिवस के उत्सव का आयोजन करने के इनके कार्यों की विशेष सराहना करता हूँ। आपके सारे कार्यों के लिए धन्यवाद !”



साधु-संतों व सरकारों का समर्थन



श्री रघुवर दास, मुख्यमंत्री, झारखंड : १४ फरवरी को ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ के आयोजन से भावी पीढ़ी उन्नति की ओर अग्रसर होगी। आज के युवा पाश्चात्य कल्चर के प्रभाव में आकर गुरुजनों तथा माता-पिता का सम्मान भूलते जा रहे हैं। बाल व युवा पीढ़ी दिशाविहीन हो रही है। ऐसी स्थिति में युवा सेवा संघ, राजनांदगाँव द्वारा यह आयोजन निश्चित रूप से उनके विकास में मील का पत्थर साबित होगा और बच्चे संस्कारित होंगे तथा उनका चहुँमुखी विकास होगा।

आनेवाली पीढ़ी को मार्ग से भटका रहा है। संत आशारामजी बापू ने जो मातृ-पितृ पूजन दिवस चालू किया है, वह बहुत अच्छा है।



श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंदजी सरस्वती, निरंजनी अखाड़ा : आशारामजी ने वेद, गीता, संस्कृति का प्रचार-प्रसार बड़ी अच्छी तरह से और बड़ी द्रुतगति से किया है। १४ फरवरी को माता-पिता एवं सद्गुरु का पूजन होना चाहिए।



श्री श्री १००८ आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी बालकानंद गिरि, आनंद पीठाधीश्वर : माता-पिता के पूजन दिवस से बढ़िया सौभाग्य की बात हमारे लिए नहीं हो सकती। इसे सबको लागू करना चाहिए।



श्री देवकीनंदन ठाकुर, भागवत कथाकार : वेलेंटाइन डे मनाकर लोग ‘प्रेम’ शब्द को अपवित्र कर रहे हैं। इसके स्थान पर ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ की जो परम्परा आपने चलायी, वह बहुत ही सुंदर है।



श्री कैलाश विजयवर्गीय, राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा : यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि पूज्य बापू आशारामजी महाराज के भक्त हर वर्ष १४ फरवरी का दिन ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ के रूप में मनाते हैं। पूरे संस्थान को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और सबसे अपील भी करता हूँ कि अपने बच्चों के साथ इस कार्यक्रम में सम्मिलित हों।



श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ : मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अ. भा. श्री योग वेदांत सेवा समिति, अहमदाबाद के मार्गदर्शन में युवा सेवा संघ व बाल संस्कार संचालन समिति द्वारा हर साल की तरह इस साल भी विश्व स्तर पर १४ फरवरी को ‘मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम’ किया जा रहा है। इससे बच्चों व युवाओं में माता-पिता के प्रति आदर की भावना बढ़ेगी। मातृ-पितृ पूजन दिवस के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।



श्री शिव प्रताप शुक्ला, केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री : भारत में माता-पिता का अभिवादन करने की परम्परा रही है, यही इस देश की विशेषता रही है और यह कायम रहनी चाहिए। मातृ-पितृ पूजन दिवस और बढ़े ऐसी मैं शुभकामना करता हूँ।

जगद्गुरु पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा : वेलेंटाइन डे

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ९ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३१५
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०१९
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
फाल्गुन-चैत्र वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org,

www.rishiprasad.org



सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'विद्यार्थी विशेषांक' में...

- ❖ गुरु संदेश ❖ किसको कहते हैं ऊँची पढ़ाई और तुच्छ पढ़ाई ? ४
- ❖ ईश्वर का दर्शन कैसे हो ? ६
- ❖ यह जिसे मिल जाय उसे सब मिल जाता है ७
- ❖ तेजस्वी युवा ❖ यह भी अपने-आपमें एक बड़ी सिद्धि है ८
- ❖ सफलता ऐसे लोगों की परछाई बन जाती है २०
- ❖ इसके आगे आर्थिक लाभ-हानि कुछ नहीं ९
- ❖ शास्त्र प्रसाद ❖ बाल्यावस्था से ही सत्संग व शास्त्राभ्यास में जुट जायें ९
- ❖ पर्व मांगल्य : आत्म-अन्वेषण ❖ रामराज्य की स्थापना कैसे हो ? ११
- ❖ पर्व मांगल्य ❖ अपने में हनुमानजी के गुण धारण करो १२
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग ❖ ऐसी बरसी गुरुवर की करुणा-कृपा ! १४
- ❖ मधुर संस्मरण ❖ श्री मनु काका ❖ श्री सिद्धनाथजी १६
- ❖ योग-वेदांत-सेवा ❖ योगस्थः कुरु कर्माणि... १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ❖ एकाग्रता का प्रभाव, पुनः हुआ ग्रंथ का प्रादुर्भाव १८
- ❖ याद न रहने के मूल कारण क्या ?
- ❖ उच्च आदर्शों का संचार करती है 'ऋषि प्रसाद' - निलेश कुमार गौड़
- ❖ महिला उत्थान ❖ मुक्तकेशी देवी के संस्कारों का प्रभाव २१
- ❖ तत्त्व दर्शन ❖ ब्रह्म-साक्षात्कार के लिए आओ करें... २२
- ❖ प्रेरणादायी सूत्र ❖ स्कूली परीक्षा के साथ जीवन की परीक्षा में सफलता हेतु २३
- ❖ काव्य गुंजन ❖ कोशिश करनेवालों की कभी... - सो. द्विवेदी २३
- ❖ 'कल्याणी' या 'अतिकल्याणी' ? २४
- ❖ माँ ! यह गाय तुम्हारा बालक होती तो ? २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
- ❖ जीवन पाथेय ❖ महानता की ओर ले जानेवाले अनमोल मोती २७
- ❖ संस्था समाचार ❖ पूज्यश्री का विश्वमंगलकारी संकल्प... २८
- ❖ आप कहते हैं... ❖ सत्य यही है कि बापूजी निर्दोष हैं २८
- ❖ बापूजी के साथ न्याय होना चाहिए - धर्मेन्द्र गुप्ता २९
- ❖ भक्तों के अनुभव ❖ ऋषि प्रसाद व सत्संग ने दिया नया जीवन ३०
- ❖ एक कमजोर विद्यार्थी कैसे बना... - अंकित सिंह
- ❖ शरीर स्वास्थ्य ❖ विविध रोगनाशक एवं स्वास्थ्यरक्षक नीम ३१
- ❖ प्राकृतिक नियमों का करें पालन, बना रहेगा स्वस्थ जीवन
- ❖ बल-बुद्धिवर्धक विशेष लाभकारी उत्पाद
- ❖ अनमोल कुंजियाँ ❖ पढ़ाई में आशातीत लाभ हेतु ९, ३४, २५
- ❖ मनोबल व आत्मबल वृद्धि हेतु

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

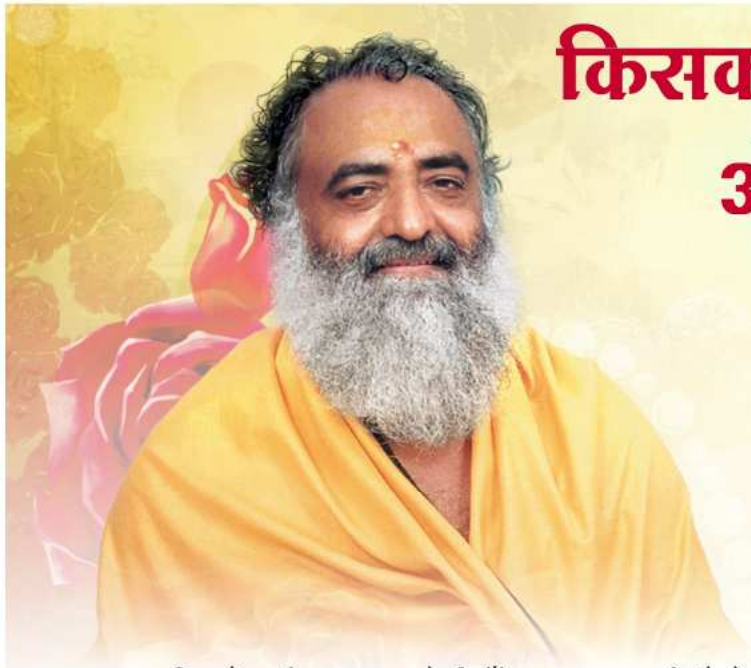
॥ ईश्वर ॥ रोज सुबह ७-०० बजे	DIGIANA DIVYAJYOTI रोज रात्रि १०-०० बजे	मंगलमय इंटरनेट चैनल www.ashram.org/live	TAKE PRARTHANA रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे
--------------------------------	---	---	---

- ❖ 'ईश्वर' टी.वी. चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. १०६८), डिश टी.वी. (चैनल नं. १०५७), विडियोकॉन (चैनल नं. ४८८) व 'Jio Tv' एंड्रोइड एप तथा अन्य केबलों पर उपलब्ध है।
- ❖ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ❖ 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

किसको कहते हैं ऊँची पढ़ाई और तुच्छ पढ़ाई ?

- पूज्य बापूजी



जिनके जीवन का कोई ऊँचा लक्ष्य नहीं है वे हलकी इच्छाओं में, हलके दिखावों में, हलके आकर्षणों में खप जाते हैं। जीवन का कोई ऊँचा ध्येय बना लेना चाहिए और ऊँचे-में-ऊँचा ध्येय तो यह है कि जीवनदाता का अनुभव करें। अनंत ब्रह्मांडों का जो आधार है उसका साक्षात्कार करना - यह ऊँचा लक्ष्य है।

दुनिया में हर इज्जतवाले से ऊँची इज्जत होती है आत्मज्ञानी की, हर ऊँचे पद से ऊँचा पद होता है आत्मपद, हर ऊँचे ज्ञान से ऊँचा ज्ञान होता है आत्मज्ञान। सारे ज्ञान इसीसे पैदा होते हैं - चाहे सिविल सर्जन का ज्ञान हो, चाहे टेक्नोलॉजी का हो, साइकोलॉजी का हो या बायोलॉजी का हो - सभी आत्मा की सत्ता से होते हैं। चाहे अतल-वितल का ज्ञान हो, चाहे नरक का ज्ञान हो, सारे ज्ञान का मूल स्थान, उद्गम-स्थान आत्मा है। सारे विश्व का ही नहीं, सारे ब्रह्मांडों का ज्ञान आत्मा की सत्ता से ही होता है। ब्रह्माजी भी सृष्टि का संकल्प करते हैं न, वे भी सत्ता उसी आत्मा से लाते हैं। शिवजी संहार करते हैं, वे भी शक्ति आत्मा से लाते हैं। सारी शक्तियाँ जो हैं

गुरु
संदेश

विश्वभर की, वे उसी विश्व-चैतन्य आत्मा से आती हैं। उस चैतन्य आत्मा का ज्ञान सर्वोपरि है।

जो आँख का विशेषज्ञ है वह मस्तिष्क का नहीं होता, जो हृदय का विशेषज्ञ है वह दूसरे अंगों का विशेषज्ञ नहीं बन पाता। एक-एक अंग के ज्ञान की निपुणता पाने में ही उनका समय खप जाता है। यह तो हुई केवल स्थूल शरीर के एक-एक अंग के विशेषज्ञ की बात लेकिन आत्मा तो पूरे शरीर

का विशेषज्ञ है, स्वर्ग-नरक का विशेषज्ञ है और सारे विशेषज्ञों का भी आधार तो वह आत्मा ही है। ढेर सारे ज्ञान एक-एक करके पा भी लोगे तो भी

एक दिन जीवन पूरा हो जायेगा और मृत्यु के एक ही झटके में सब छूट जायेगा लेकिन उस एक आत्मज्ञान को पा लिया तो सब कुछ मिल गया।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

ऐसी उच्च शिक्षा पा लो

ऊँची पढ़ाई और तुच्छ पढ़ाई किसको कहते हैं, जरा समझ लें। तुच्छ पढ़ाई वह है जो तुच्छ शरीर को 'मैं' मानना सिखाये और तुच्छ वस्तुओं से सुखी होने की तरफ तुम्हारी इच्छाएँ, वासनाएँ बढ़ाये। एम.बी.ए. कर लो मतलब गंजे व्यक्ति को भी कंघी बेचने की शिक्षा पा लो; जो आदिवासी कपड़े नहीं पहनते हैं उनको भी कपड़े धोने का साबुन पकड़ा दो और पैसे निकलवाओ। यह तुच्छ शिक्षा है। संत कबीरजी कहते हैं :

कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।

(रंगीन पृष्ठ २ से 'विश्वभर में छाया...' का शेष)

श्री भूपेन्द्रसिंह चुडासमा, शिक्षा एवं गौ-संवर्धन व नागरिक उड्डयन मंत्री, गुजरात : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में नये अभियान का शुभारम्भ किया गया है, जो सराहनीय है। आपका यह महा अभियान अधिक-से-अधिक आगे बढ़े। इसके द्वारा कुमार-कुमारिकाएँ, युवक-युवतियाँ आज के आधुनिक युग में माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यों को समझेंगे और श्रेष्ठ नागरिक अवश्य बनेंगे। आपकी संस्था द्वारा हो रहे इस सराहनीय कार्य के लिए मैं हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

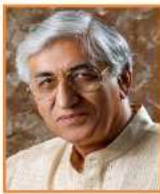


डॉ. नीरा यादव, स्कूली शिक्षा एवं उच्च व तकनीकी शिक्षा मंत्री, झारखंड : मातृ-पितृ पूजन दिवस युवाओं को संयमी, चरित्रवान बनाने में सहायक होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह झारखंडसहित देश के करोड़ों युवाओं का ओज-तेज व आत्मबल बढ़ाने व उनकी चहुँमुखी उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, स्कूल शिक्षा व सहकारिता मंत्री, छत्तीसगढ़ : १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने से बच्चों व युवाओं में 'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।' की भावना जागृत होगी।



श्री टी.एस. सिंहदेवजी, स्वास्थ्य मंत्री, छत्तीसगढ़ : इस पर्व का स्वागत है। बिना माता-पिता के तो मानवता ही नहीं है, समाज ही नहीं है।



श्री दिलाराम चौहान, महासचिव, हिमाचल शिक्षा

समिति : हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित सभी सरस्वती विद्या मंदिरों में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जायेगा।



स्वामी श्री नरेन्द्र भारतीजी : सभी बच्चे १४ फरवरी को अपने माता-पिता से प्रेम करें और प्रणाम करके सच्चा आशीर्वाद प्राप्त करें।



श्री शिवाकांतजी महाराज, भागवत कथाकार, कानपुर : वेलेंटाइन डे के नाम पर युवा वास्तव में गुमराह हो रहा है। यदि प्रेमी पर्व मनाना है तो मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाइये।



श्री रमाकांत गोस्वामी, कथाकार, मथुरा : १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में मनाना चाहिए।



श्री भाऊराव वाडेकर, अध्यक्ष, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज शिक्षण व आरोग्य प्रसारक मंडल : आशारामजी बापू का मैं बहुत पहले से सत्संग सुनता हूँ और उनकी पुस्तकों का अध्ययन भी करता हूँ। उनसे मातृ-पितृ पूजन का महत्व समझकर मैंने अपने विद्यालय में यह शुरू किया। यह सभी विद्यालयों में होना चाहिए।



श्री उमाकांत मिश्र, सम्पादक, सीमा रेखा हिन्दी दैनिक : आशारामजी बापू समाज, देश और भारतीय संस्कृति के हित में प्रकाशपुंज बिखेर रहे हैं परंतु उन्हें जेल में रखा गया है, यह राष्ट्र के लिए अच्छी बात नहीं है। राष्ट्र के जो कर्णधार हैं उनका यह धर्म होता है कि अविलम्ब इन्हें जेल से मुक्त किया जाय ताकि ये भारतीय संस्कृति का अलख जगायें।

ऐसी बरसी गुरुवर की करुणा-कृपा !

जौनपुर (उ.प्र.) के सुरेश मौर्य (वर्तमान निवास - सूरत) लगभग २६ वर्षों से पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य व सेवा का लाभ लेकर अपना जीवन उन्नत करते आये हैं। उनके द्वारा बताये गये कुछ संस्मरण :

सन् १९९० में इलेक्ट्रॉनिक्स का डिप्लोमा करने हेतु मैं सूरत आया था। पढ़ाई पूरी होने के बाद मुझे एक दुकान पर जॉब मिला। दुकान के मालिक बापूजी से जुड़े थे। उनके घर के सभी लोग बापूजी से दीक्षित थे व पूजा-पाठ करते थे, मौन भी रखते थे। साधना की रक्षा के लिए वे नियम-निष्ठा में बहुत मजबूत थे, जिस-किसीके घर खाते-पीते नहीं थे। यह सब देख मुझे लगता था कि 'ये किस जमाने के लोग हैं ! यह नहीं करना, वह नहीं खाना... क्या-क्या बातें पकड़ के रखते हैं !' तब वह सब मेरी समझ में नहीं बैठ पाता था। बापूजी से जुड़ने के बाद मुझे पता चला कि साधन-भजन का सात्त्विक प्रभाव बिखरे नहीं इसलिए खान-पान, संग, माहौल आदि की सात्त्विकता का ध्यान रखना कितना जरूरी है।

दिसम्बर १९९२ में सूरत में बापूजी का ध्यानयोग शिविर था। दुकान-मालिक के घर के आध्यात्मिक वातावरण का मेरे चित्त पर ऐसा विलक्षण प्रभाव पड़ा कि मुझे भी बापूजी के दर्शन की उत्कंठा जगी। आश्रम में पहुँचा, बापूजी के दर्शन किये व सत्संग सुना। पहले ही सत्संग ने ऐसा रंग लगा दिया कि सत्संग के बाद सब लोग तो चले गये लेकिन मुझे घर जाने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। आश्रम के दर्शन करते-करते मैं बड़ बादशाह की तरफ चला गया। वहाँ लिखा था कि 'श्रद्धा-भक्तिपूर्वक जो भी संकल्प यहाँ करते हैं और ७ परिक्रमा लगाते हैं, वह संकल्प फलीभूत होता है।'

मैंने बड़ बादशाह की परिक्रमा लगायीं और बापूजी के श्रीचित्र के सामने दंडवत् हो गया। शाम हो चुकी थी। दिसम्बर महीने की कड़ी ठंड थी और मैंने गर्म कपड़े नहीं पहने थे।

आश्रम के एक भाई मुझे उठाने लगे, बोले : "हरि ॐ ! आश्रम बंद हो चुका है, लोग जा चुके हैं, आप भी पधारिये। यहाँ किसीके रुकने की व्यवस्था नहीं है।"

उन्होंने मुझे दो बार उठाने का प्रयास किया लेकिन मैं वहाँ से उठा नहीं। फिर वे भाई हाथ जोड़कर कहने लगे : "भाईसाहब ! अगर आपने कोई संकल्प लिया हो तो बताइये ताकि मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।"

मैंने कहा : "मैंने संकल्प किया है कि बापूजी ! आप जब तक मुझे साक्षात् दर्शन नहीं देंगे तब तक मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।"

भाई बोले : "इस समय बापूजी घूमने निकलते हैं। आप गेट से जैसे ही बाहर जायेंगे तो हो सकता है कि बापूजी के दर्शन हो जायें।"

मैं वहाँ से उठा और गेट के बाहर पहुँचा। मुझे एक भाई के साथ पूज्यश्री दिखाई दिये। मैं दौड़कर गया और दंडवत् प्रणाम किया।

पूज्यश्री बोले : "कौन है ? खड़ा हो जा, कहाँ से आया है ?"

"बापूजी ! मैं यू.पी. से आया हूँ।"

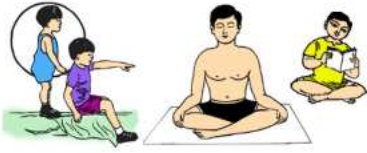
"यहाँ कहाँ रहता है ?"

"जी उधना में रहता हूँ।"

"क्या करता है ?"

"टी.वी. सुधारने का डिप्लोमा किया है। अभी कोई स्वयं का रोजी-रोटी का साधन नहीं है।"

जैसे ही मैंने ऐसा कहा तो उदारहृदय, करुणास्वरूप परम पिता ने कहा : "जा, जो भी



विद्यार्थी संस्कार



एकाग्रता का प्रभाव, पुनः हुआ ग्रंथ का प्रादुर्भाव

एक राजा के दरबार में एक विद्वान थे। वर्षों के परिश्रम के बाद उन्होंने एक ग्रंथ रचा। राजा ने उनसे कहा : “इस ग्रंथ के साथ मेरा नाम जोड़ दो तो यथेष्ट स्वर्णमुद्राएँ दूँगा।” पर उन्होंने निर्भयतापूर्वक राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। राजा आगबबूला हो उठा और उस ग्रंथ की एकमात्र हस्तलिखित प्रति को जलवा दिया। इससे विद्वान को बड़ा दुःख हुआ और उनका खाना-पीना छूट गया।

विद्वान की एक बेटी थी। वह अत्यंत संयमी व ब्रह्मचर्य-पालन में दृढ़ थी। प्रतिदिन देशी गोदुग्ध का सेवन करती थी। अपने गुरुदेव से प्राप्त भ्रामरी प्राणायाम जैसे यौगिक प्रयोग एवं स्मृतिशक्तिवर्धक मंत्र का जप करती थी। उसने अपने पिताजी का उदास चेहरा देखकर उनसे पूछा : “पिताजी ! आप इतने उदास और चिंतित क्यों हैं ?”

पिता ने सारी बात सुनायी। बेटी ने कहा : “पिताजी ! आप चिंतित मत होइये। आपका ग्रंथ मैंने पढ़ा है। मुझे कंठस्थ है। मैं पूरा ग्रंथ लिखवा देती हूँ।” बालिका ने ग्रंथ को पुनः अक्षरशः तैयार करा दिया। कैसा है भारत की एक नन्ही बालिका की एकाग्रता और स्मरणशक्ति का प्रभाव !

हे विद्यार्थियो ! भारत के महापुरुषों, ऋषि-मुनियों द्वारा बतायी गयी कुंजियों का लाभ ले के आप भी अपनी बुद्धि व स्मृति शक्ति को कुशाग्र व सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर सकते हो। इतना ही नहीं, अपनी विवेक-शक्ति को जगा के महापुरुषों की कृपा का सहारा ले के आप महानतम उपलब्धि तथा सर्व शक्तियों, सामर्थ्यों, योग्यताओं व श्रेष्ठताओं का जो आधार है उस अपने आत्मस्वरूप को भी प्राप्त कर सकते हो।

विद्यार्जन में बाधक ७ दोष

आलस्यं मदमोहौ च चापलं गोष्ठीरेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथात्यागित्वमेव च ।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥

‘आलस्य, मद-मोह, चंचलता, गोष्ठी (इधर-उधर की व्यर्थ बातें करना), जड़ता (मूर्खता), अभिमान तथा स्वार्थ-त्याग का अभाव - ये सात विद्यार्थियों के लिए सदा ही दोष हैं।’

(महाभारत, उद्योग पर्व : ४०.५)

किन महापुरुष से समाज को कौन-सा ग्रंथ या सत्साहित्य मिला ?

- | | |
|-----------------------|--------------------------------|
| (१) १८ पुराण, महाभारत | (क) संत निश्चलदासजी |
| (२) पंचदशी | (ख) साँई श्री लीलाशाहजी महाराज |
| (३) वैराग्य शतक | (ग) संत श्री आशारामजी बापू |
| (४) विवेक चूड़ामणि | (घ) महर्षि वेदव्यासजी |
| (५) वेदांत छंदावली | (ङ) आद्य शंकराचार्यजी |
| (६) विचार सागर | (च) संत भोले बाबाजी |
| (७) मन को सीख | (छ) योगी भर्तृहरिजी |
| (८) ईश्वर की ओर | (ज) विद्यारण्य स्वामीजी |

(उत्तर इसी अंक में)

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी



संस्कारों से प्राप्त शिक्षण

— संत विनोबाजी भावे

संस्कारों से जो शिक्षण प्राप्त होता है, वह और किसी पद्धति से नहीं।

...ऐसों के साथ संगत रखिये

— परमहंस योगानंदजी

इधर-उधर की अत्यधिक गप्प लड़ानेवालों के साथ अधिक संगत मत बढ़ाइये। उसमें कोई सुख नहीं है। संगत ठीक से चुनकर बनाइये। किन्हीं ज्ञानी पुरुष या अच्छे मित्रों के साथ संगत रखिये जो आपके मन में आध्यात्मिक विचार जगा सकें, और ईश्वर को पाने का प्रयास करते रहिये।



बिना खोजे नहीं मिलता

— संत पलटूदासजी

बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥



‘कोई लाख कोशिश करे, बिना आत्मखोज किये, बिना आत्ममंथन किये किसीको अपने वास्तविक स्वरूप - आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। जैसे - दूध जमाने से दही बन जाता है लेकिन घी तो दही के मंथन आदि के बाद ही प्राप्त होता है।’

अच्छे संस्कारों की जरूरत है



— डॉंगरेजी महाराज

देश को सम्पत्ति की जितनी जरूरत है उससे अधिक अच्छे संस्कारों की जरूरत है।



विचारपूर्वक प्रयत्नों से

सब सम्भव है

— समर्थ रामदासजी

हमारे भाग्य में किस बात की कमी है? केवल उचित प्रयत्न नहीं करने के कारण ही हम लक्ष्य की प्राप्ति से वंचित रह जाते हैं। प्रयत्न करें तो कैसे करें यही पहले समझ में नहीं आता है। मुख्य प्रयत्न तो विचारों का है अतः पहले उसके विषय में बोलना उचित रहेगा। हम सत्य एवं नियम की राह पर चलें तथा नीति और न्याय को नहीं छोड़ें।

बुद्धि से ही सब कुछ होता है और इसको देनेवाले भगवान नारायण हैं। प्रथम इन्हींको अपना बना लीजिये, जिनके चरणों में लक्ष्मी वास करती है। कोई भी कार्य करने से होता है इसलिए पहले प्रयत्न करना ही चाहिए। प्रयत्न ही परमेश्वर है, इसे अंतःकरण में दृढ़ करना हितकर है।

पत्थर की नाव पर मत चढ़ो

— संत कबीरजी

कबीर कुसंग न कीजिये, पाथर जल न तिराय।
कदली सीप भुजंग मुख, एक बूँद तिर भाय ॥



कुसंगति न करो। जैसे पत्थर की नाव पर चढ़कर कोई नदी पार नहीं कर सकता, ऐसे ही कुसंगति करते हुए कोई भवसागर से पार नहीं हो सकता। संगति का बड़ा प्रभाव पड़ता है। (लोकमान्यतानुसार) स्वाति नक्षत्र में ओस की बूँद केले में पड़ने से कपूर, सीपी में पड़ने से मोती और सर्प के मुख में पड़ने से विष हो जाती है अर्थात् एक ही प्रकार की बूँद में संगति-अनुसार तीन प्रकार के गुण हो जाते हैं।

बापूजी के साथ न्याय होना चाहिए

**श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर
स्वामी विज्ञानानंदजी सरस्वती,
निरंजनी अखाड़ा :** संत



आशारामजी समाज सुधारक रहे हैं। उन्होंने वेद, गीता, संस्कृति का प्रचार-प्रसार बड़ी अच्छी तरह से और बड़ी द्रुतगति से किया है। जिन हिन्दुओं को धर्मांतरित किया जा रहा था, आशारामजी ने उनकी धर्म-रक्षा की और उनमें हिन्दू धर्म के प्रति निष्ठा जगायी। उन्होंने और भी अनेक अच्छे कार्य किये हैं।

उन पर चारित्रिक दोष लगवाकर उनको इस प्रकार से अपमानित करने से भारतीय संस्कृति का अपमान होता है। चाहे पूर्व सरकार हो या वर्तमान सरकार, उसको हमारे वयोवृद्ध संत के साथ न्याय करना चाहिए।

महामंडलेश्वर स्वामी रामेश्वरानंदजी :



वेलेंटाइन डे पर फूल देकर युवा पीढ़ी जो आजकल विदेशी नीति को अपना रही है, उसमें प्रेम तो देखनेमात्र को है, बाकी इसके द्वारा शोषण ही होता है। वह प्रेम नहीं, एक प्रकार की शत्रुता है। प्रेम तो वास्तव में माता-पिता, भगवान और सद्गुरु से ही होता है।

श्री रमाकांत गोस्वामी, कथाकार, मथुरा :



संत आशारामजी बापू के साथ न्याय होना चाहिए। जिस तरह उनके साथ हुआ - बेटे के खिलाफ, पुत्री के खिलाफ, पत्नी के खिलाफ भी एफ.आई.आर. - ऐसा लगता है कि योजनाबद्ध तरीके से उनके खिलाफ साजिश की गयी है।

समाज को आवाज उठानी चाहिए कि न्याय सबके लिए एक जैसा होना चाहिए। यदि जमानत

मिलती है तो सबको मिलनी चाहिए। औरों को मिल रही है और इनको (बापूजी को) नहीं मिल रही है - यह गलत हो रहा है।

श्री देवकीनंदन ठाकुर, भागवत कथाकार :

इस देश में सबसे ज्यादा असुरक्षित कोई है तो वह है सत्य सनातन धर्म। हमारे साधु-संतों को, संस्कृति को बदनाम किया जा रहा है। मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि पादरी फ्रैंको मुलक्कल को बेल कैसे मिल गयी ?



सभी भारतीयों से मैं निवेदन करूँगा कि हमारे धर्म व संस्कृति रक्षक संत-महापुरुष गिनती के रह जायें उससे पहले अपने धर्म का सम्मान करें और साधु-संत, महात्मा, कथाकार - जो हमारे धर्म को आगे बढ़ाते हैं, उनकी सच्चाई को जानें, उनका सम्मान करें और उनसे सीखें कि इस धर्म को कैसे आगे बढ़ाया जाय।

हमारे प्रति वही कानून-व्यवस्था, मीडिया सब अलग तरीके से व्यवहार करते हैं, अन्य किसी धर्म की बात होगी तो उसके साथ अन्य तरीके का व्यवहार होता है। हम लोग भारत की जनता से इसमें बदलाव की उम्मीद करते हैं।

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता)

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हेतु यह अंक ध्यान से पढ़ें।

(१) बुद्धि के लिए मानो भोजन है।

(२) बड़ा दिन तो वह है जब बड़े-में-बड़े का ज्ञान हो।

(३) की शुद्धि से अंतःकरण की शुद्धि होती है।
(उत्तर अगले अंक में)

विविध रोगनाशक एवं स्वास्थ्यरक्षक नीम



प्राकृतिक वनस्पतियाँ
लोक-मांगल्य एवं
व्याधिनिवारक गुणों से
युक्त होने के कारण भारतीय संस्कृति में
पूजनीय मानी जाती हैं। इनमें नीम भी एक है।
इसकी जड़, फूल-पत्ते, फल, छाल -
सभी अंग औषधीय गुणों से भरपूर
होते हैं।

शरीर
स्वास्थ्य

आयुर्वेद अनुसार नीम शीतल,
पचने में हलका, कफ-पित्तशामक व
थकान, प्यास, खाँसी, बुखार, अरुचि, कृमि,
घाव, उलटी, जी मिचलाना, प्रमेह (मूत्र-संबंधी
रोगों) आदि को दूर करनेवाला है।

नीम के पत्ते नेत्रहितकर तथा विषनाशक होते
हैं। इसके फल बवासीर में लाभदायी हैं। नीम के
सभी अंगों की अपेक्षा इसका तेल अधिक
प्रभावशाली होता है। यह जीवाणुरोधी कार्य करता
है।

औषधीय प्रयोग

नीम के पत्ते : (१) स्वप्नदोष : १०
मि.ली. नीम-पत्तों के रस या नीम अर्क में २ ग्राम
रसायन चूर्ण मिला के पियें।

(२) रक्तशुद्धि व गर्मीशमन हेतु : सुबह
खाली पेट १५-२० नीम-पत्तों का सेवन करें।

फूल व फल : * पेट के रोगों से सुरक्षा :

इसी अंक के - * 'किन महापुरुष से समाज को
कौन-सा ग्रंथ या सत्साहित्य मिला?' के उत्तर :

(१) (घ), (२) (ज), (३) (छ), (४) (ड),
(५) (च), (६) (क), (७) (ख), (८) (ग)

* 'नीर-क्षीर विवेक' के उत्तर :

(१) (ग), (२) (ख), (३) (ग)

नीम के फूल तथा पकी हुई निबौलियाँ खाने से पेट
के रोग नहीं होते।

नीम-तेल : (१) चर्मरोग व पुराने घाव में :
नीम का तेल लगायें व इसकी ५-१० बूँदें गुनगुने
पानी से दिन में दो बार लें।

(२) गठिया व सिरदर्द में : प्रभावित
अंगों पर नीम-तेल की मालिश करें।

(३) जलने पर : आग से जलने से
हुए घाव पर नीम-तेल लगाने से वह
शीघ्र भर जाता है।

(नीम अर्क, नीम तेल, मुलतानी नीम
तुलसी साबुन एवं रसायन चूर्ण सत्साहित्य
सेवाकेन्द्रों व संत श्री आशारामजी आश्रम की
समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध हैं।)



पूज्य बापूजी की स्वास्थ्य-कुंजी

यदि रात्रि को बुरे विचार आते हैं या स्वप्नदोष
होता है तो तकिये पर अपनी माँ का नाम केवल
उँगली से (स्याही से नहीं) लिखकर सोयें। अगर
कामविकार से बचना है, कामकेन्द्र को रूपांतरित
करना है तो राम-राम... शिव-शिव...
हनुमान... ॐ अर्यमायै नमः... इस प्रकार रोज
सुमिरन करने से काम 'राम' में बदल जायेगा।
प्राणायाम और गुरुमंत्र-जप भी इसमें बड़ी मदद
करेंगे।

मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम (आवरण पृष्ठ ४ से आगे की तस्वीरें)



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।



स्मृति व दिमागी शक्ति
वर्धक उत्तम टॉनिक

शंखपुष्पी सिरप एवं ब्राह्मी शरबत

परीक्षा के दिनों में
विशेष सेवनीय

इनका सेवन बुद्धि, स्मरणशक्ति व स्फूर्ति की वृद्धि, मानसिक रोगों, मानसिक-बौद्धिक थकावट, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता आदि में लाभदायी है। स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु ये दिव्य औषधियाँ हैं। ब्राह्मी जैसी गंधवाले कृत्रिम फलेवर नहीं, ऐसा शुद्ध ब्राह्मी का शरबत हो तब ये लाभ मिलते हैं।



देशी गाय के पवित्र पीयूष से निर्मित **होमियो पावर केअर**

इन गोलिएँ में हैं ऐसे पोषक तत्व, जो देते हैं आपके शरीर के हर हिस्से को उचित पोषण, उत्तम स्वास्थ्य और ढेर सारी ऊर्जा! ये रोगप्रतिकारक शक्ति व कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। शारीरिक विकास एवं कोषों के पुनर्निर्माण में सहायक हैं। ये गर्भवती एवं प्रसूताओं के लिए उत्तम टॉनिक हैं। बुद्धिजीवी, शारीरिक काम करनेवाले, खिलाड़ी एवं वृद्ध लोगों के लिए तो ये वरदानस्वरूप हैं।



वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि कथित जर्सी, होल्स्टीन गायों के दूध ('A1' दूध) से डायबिटीज, हृदयरोग, कोलेस्ट्रॉल-संबंधी बीमारियाँ आदि में वृद्धि होती है। देशी गाय के दूध ('A2' दूध) से ऐसी अनेक बीमारियों से स्वास्थ्य-रक्षा होती है एवं बल, बुद्धि, स्फूर्ति, मेधाशक्ति आदि में चमत्कारिक बढ़ोतरी होती है। जर्सी गाय के पीयूष* से बने ९० बाजारू नॉनवेज कैप्सूलस ₹३०० रु. में और देशी गाय के पवित्र पीयूष से बनीं ये ९० गोलिएँ मात्र ₹२० रु. में! शुद्ध और सस्ता जरूर अपनायें।

* गौ-प्रसव उपरांत पहले कुछ दिनों का दूध

उपरोक्त औषधियों की प्राप्ति की जानकारी हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramstore.com

देश-विदेश में हुए सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रमों के कुछ दृश्य

RNI No. 48873/91

RNP. No. GAMC 1132/2018-20

(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)

Licence to Post Without Pre-payment.

WPP No. 08/18-20

(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)

Posting at Dehradun G.P.O. between

1st to 17th of every month.

Date of Publication: 1st March 2019



हैदराबाद



छीरी, जि. वलसाड (गुज.)



छिंदवाड़ा गुरुकुल



लुधियाना गुरुकुल



जयपुर गुरुकुल



अहमदाबाद गुरुकुल



सुरत गुरुकुल



काशी गुरुकुल



इंदौर गुरुकुल



भोपाल गुरुकुल



ब्रैम्पटन (कनाडा)



इंडियानापोलिस (यू.एस.ए.)



न्यूजर्सी



दुबई



शारजाह
(यू.ए.ई.)



माउंटेन हाउस (यू.एस.ए.)



बोस्टन



पिट्सबर्ग-कैलिफोर्निया



लम्की, जि. कैलाली (नेपाल)



ब्रिसबेन (ऑस्ट्रेलिया)



ह्युस्टन (यू.एस.ए.)



शिर्दया-दुबई



कानपुर



हिंगलीकट, जि. गंजम (ओड़िशा)



जमशेदपुर (झारखंड)



अमरावती (महारा.)



दिल्ली



चेन्नई



सिंदोल, जि. बीदर (कर्नाटक)



अम्बाला
(हरि.)



नाथद्वारा (राज.)



गुम्बा, जि. कठुआ (जम्मू-कश्मीर)



वडोदरा



यींगकियांग (अरुणाचल प्रदेश)



देहरादून



अंबोहर, जि. फाजिल्का (पंजाब)



शाहजहाँपुर
(उ.प्र.)



दादरा (दादरा एवं नगर हवेली)

(आवरण पृष्ठ ३ भी देखें)